अध्याय 10 : राज्य के नीति निर्देशक तत्व (DPSPs)

भाग-4 : अनुच्छेद 36 से 51

1) परिचय (General Introduction)
2) निदेशक तत्वों का वर्गीकरण (Classification)
3) अनुच्छेद-वार पूर्ण विवरण (Article-wise Details : 36-51)
4) भाग-4 से बाहर के निदेश

Chapter 10: Directive Principles of State Policy (DPSPs)

Part-IV : Articles 36 to 51

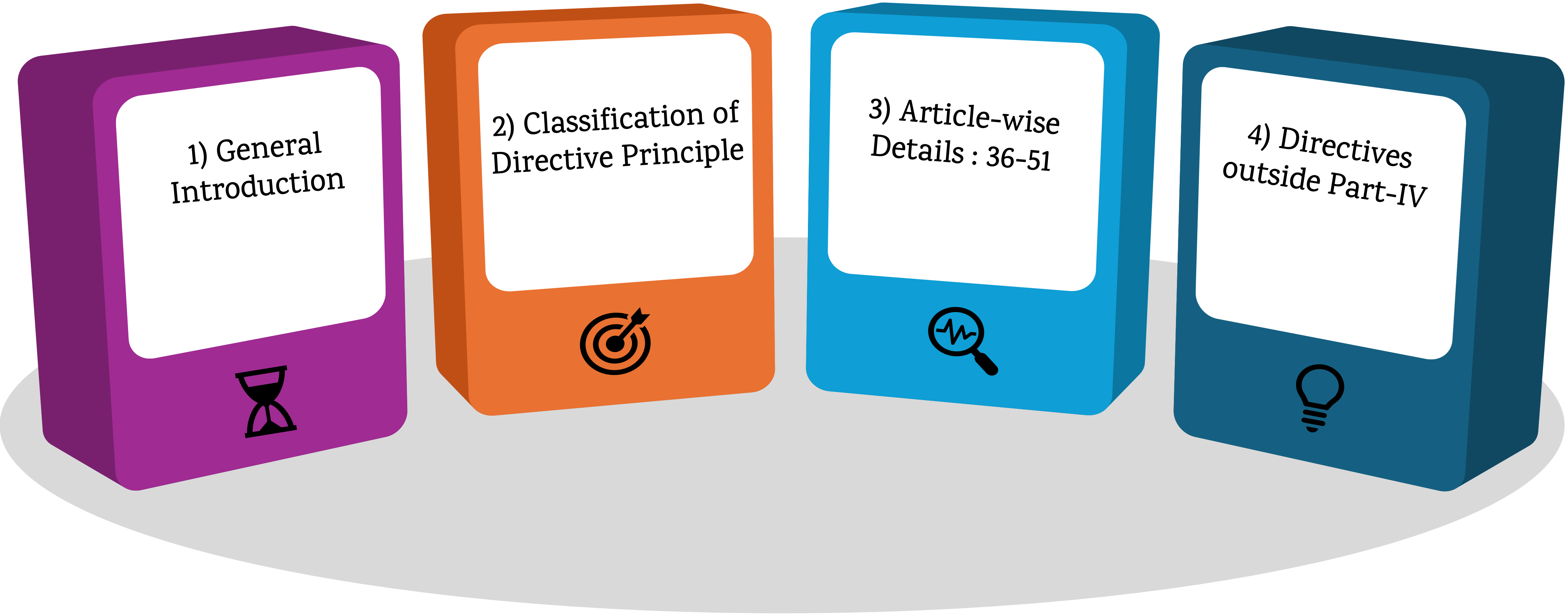

1) परिचय (General Introduction)

1) उल्लेख → **भाग-4 : अनुच्छेद 36 से 51**

2) स्रोत → **आयरलैंड (Ireland)**

- भारत सरकार अधिनियम, 1935 → "इंस्ट्रूमेंट्स ऑफ इंस्ट्रक्शन्स"

3) डॉ. अंबेडकर →**संविधान की 'एक नवीन और अनूठी** विशेषता' (A Novel Feature)

4) ग्रेनविल ऑस्टिन → मूल अधिकारों और निदेशक तत्वों दोनों को **'संविधान की आत्मा एवं दर्शन (Conscience of the Constitution)'**

5) मूल उद्देश्य→

- **'लोक कल्याणकारी राज्य' (Welfare State) का निर्माण**
- अनुच्छेद 37 → किसी कानून या नीति को बनाते समय राज्य इन्हें ध्यान में रखेगा।
- अनुच्छेद 38 (1) → **सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय'**

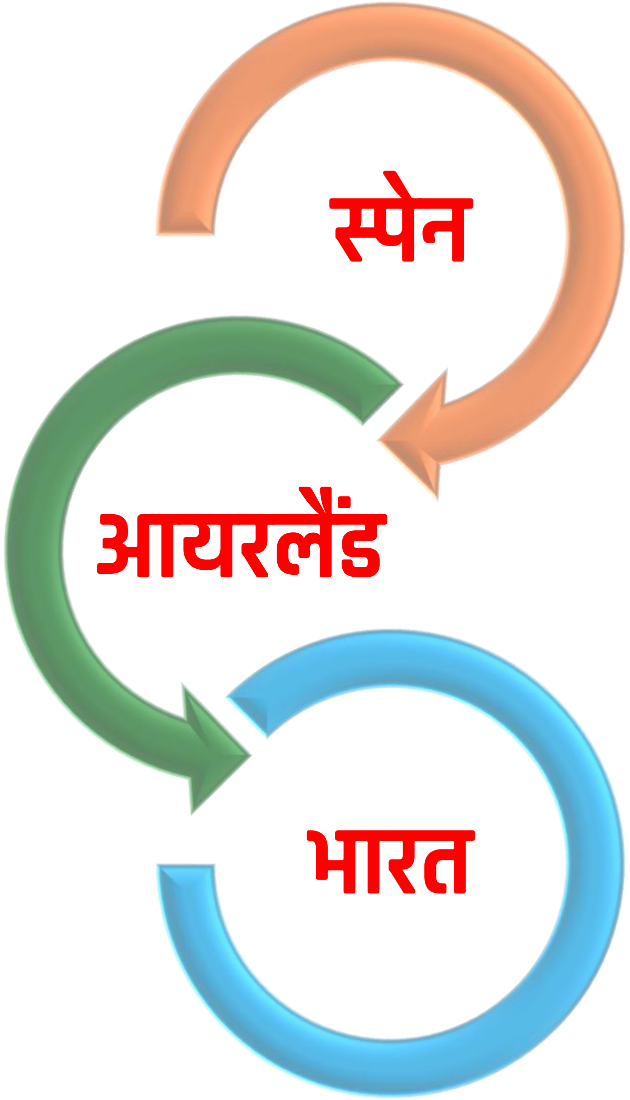

1) General Introduction

1) Mentioned in → **Part-IV : Articles 36 to 51**
2) Source → **Ireland**
   - Government of India Act, 1935 → "Instrument of Instructions"
3) Dr. Ambedkar → 'A Novel Feature' of the Constitution
4) **Granville Austin** → described both Fundamental Rights and Directive Principles as the 'Conscience of the Constitution'
5) Basic objective →
   - **Creation of a 'Welfare State'**
   - Article 37 → The State shall keep these in mind while making any law or policy.)
   - Article 38(1) → Social, economic, and political justice

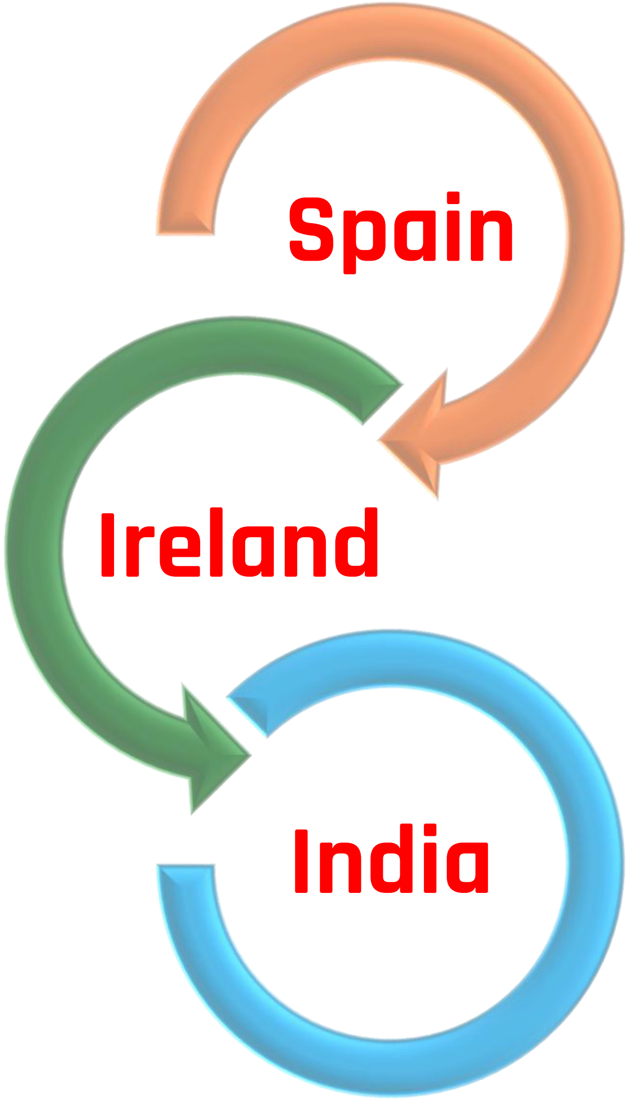

6) प्रमुख विशेषताएं →

- **सकारात्मक** — ये राज्य को कुछ मसलों पर कार्य करने का निर्देश देते हैं, जबकि मूल अधिकार **नकारात्मक** हैं क्योंकि वे राज्य को कुछ कार्यों से रोकते हैं।
  - **प्रवर्तनीय नहीं (Not Enforceable)**
  - **अनुच्छेद 37 → गैर-न्यायोचित (Non-justiciable)**
- **मिनर्वा मिल्स (1980)** → मौलिक अधिकार और नीति निर्देशक तत्व **"एक ही रथ के दो पहिए हैं"**। दोनों में से कोई भी दूसरे से कम या ज्यादा नहीं है।
- **सुप्रीम कोर्ट** → यदि राज्य अनुच्छेद 39(b) और 39(c) को लागू करने के लिए कोई कानून बनाता है, तो उसे अनुच्छेद 14 और 19 के उल्लंघन के आधार पर रद्द नहीं किया जा सकता।

≈ ***B.R. अम्बेडकर*** : *अनोखी विशेषता*

≈ ***G. ऑस्टिन*** : *संविधान की आत्मा*

≈ ***T. कृष्णामचारी*** : *सच्चा कूड़ादान (Trash)*

≈ ***K.T शाह*** : *ऐसा चैक जिसका भुगतान बैंक अपनी सुविधानुसार करे (A cheque that the Bank pays at its Convenience)*

≈ ***L.M सिंघवी (L.M. Singhvi)*** : *संविधान के जीवनदायी प्रावधान*

≈ ***KC व्हीयर*** : *लक्ष्य और आकांक्षाओं का घोषणा पत्र*

≈ ***एम.सी. छागला*** : *यदि इन सभी तत्वों का पूरी तरह पालन किया जाए, तो हमारा देश पृथ्वी पर स्वर्ग की भांति लगेगा।*

6) Key features →

- **Positive** — These direct the State to act on certain matters, whereas Fundamental Rights are negative as they restrain the State from certain actions.
  - **Not enforceable**
  - **Article 37 → Non-justiciable**
- **Minerva Mills (1980)** → Fundamental Rights and Directive Principles are "two wheels of the same chariot". Neither is inferior or superior to the other.)
- **Supreme Court** → If the State makes a law to implement Articles 39(b) and 39(c), it cannot be struck down on the ground of violation of Articles 14 and 19.)

≈ ***B.R. Ambedkar :*** *A unique feature*

≈ ***G. Austin:*** *Conscience of the Constitution*

≈ ***T. Krishnamachari :*** *A veritable dustbin (Trash)*

≈ ***K.T. Shah :*** *A cheque that the Bank pays at its Convenience*

≈ ***L.M. Singhvi :*** *Life-giving provisions of the Constitution*

≈ ***K.C. Wheare :*** *A manifesto of aims and aspirations*

≈ ***M.C. Chagla :*** *If all these principles are fully followed, our country would appear like heaven on earth.*

2) निदेशक तत्वों का वर्गीकरण (Classification)

समाजवादी सिद्धांत (Socialist Principles)

- अनुच्छेद 38
- अनुच्छेद 39
- अनुच्छेद 39A
- अनुच्छेद 41
- अनुच्छेद 42
- अनुच्छेद 43
- अनुच्छेद 43A
- अनुच्छेद 47

गांधीवादी सिद्धांत (Gandhian Principles)

- अनुच्छेद 40
- अनुच्छेद 43
- अनुच्छेद 43B
- अनुच्छेद 46
- अनुच्छेद 47
- अनुच्छेद 48

उदार-बौद्धिक सिद्धांत (Liberal-Intellectual Principles)

- अनुच्छेद 44
- अनुच्छेद 45
- अनुच्छेद 48
- अनुच्छेद 49
- अनुच्छेद 50
- अनुच्छेद 51

2) Classification of Directive Principle

Socialist Principles

- Article 38
- Article 39
- Article 39A
- Article 41
- Article 42
- Article 43
- Article 43A
- Article 47

Gandhian Principles

- Article 40
- Article 43
- Article 43B
- Article 46
- Article 47
- Article 48

Liberal-Intellectual Principles

- Article 44
- Article 45
- Article 48
- Article 49
- Article 50
- Article 51

DPSP में संशोधन : महत्वपूर्ण संविधान संशोधन अधिनियम

1. 42वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 (Mini Constitution)

स्वर्ण सिंह समिति की सिफारिशों के आधार पर इस संशोधन के माध्यम से DPSP में चार नए अनुच्छेद जोड़े गए:

- अनुच्छेद 39 (f) [Article 39(f)]: बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए अवसरों को सुरक्षित करना। (To secure opportunities for the healthy development of children.)
- अनुच्छेद 39A [Article 39A]: समान न्याय को बढ़ावा देना और गरीबों को मुफ्त कानूनी सहायता (Free Legal Aid) प्रदान करना।
- अनुच्छेद 43A [Article 43A]: उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी (Participation of workers in management of industries) सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना।
- अनुच्छेद 48A [Article 48A]: पर्यावरण की रक्षा और सुधार करना तथा देश के वनों और वन्यजीवों (Forests and Wildlife) की रक्षा करना।

2. 44वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1978

इस संशोधन के माध्यम से राज्य को सामाजिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक नया प्रावधान जोड़ा गया:

- अनुच्छेद 38 (2) [Article 38(2)]: राज्य को विशेष रूप से आय (Income), प्रतिष्ठा (Status), सुविधाओं और अवसरों में असमानताओं को कम करने का प्रयास करना चाहिए।

3. 86वां संविधान संशोधन अधिनियम, 2002

इस संशोधन ने DPSP के अनुच्छेद 45 की विषयवस्तु (Subject matter) को बदल दिया:

- अनुच्छेद 45 (संशोधित) [Article 45]: राज्य सभी बच्चों को 6 वर्ष की आयु पूरी करने तक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (Early childhood care and education) प्रदान करने का प्रयास करेगा।

महत्वपूर्ण नोट: इसी संशोधन के तहत 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा को अनुच्छेद 21A के तहत 'मौलिक अधिकार' बना दिया गया था, इसलिए अनुच्छेद 45 की भाषा में बदलाव किया गया।

4. 97वां संविधान संशोधन अधिनियम, 2011

इस संशोधन ने सहकारी समितियों (Co-operative Societies) से संबंधित एक नया नीति निदेशक तत्व जोड़ा:

- अनुच्छेद 43B [Article 43B]: राज्य सहकारी समितियों के स्वैच्छिक गठन, स्वायत्त कामकाज, लोकतांत्रिक नियंत्रण और पेशेवर प्रबंधन को बढ़ावा देने का प्रयास करेगा। (To promote voluntary formation, autonomous functioning, democratic control, and professional management of co-operative societies.)

Amendments to DPSP: Important Constitutional Amendment Acts

1. 42nd Constitutional Amendment Act, 1976 (Mini Constitution)

Based on the recommendations of the Swaran Singh Committee, four new Articles were added to the DPSP through this amendment:

- **Article 39(f):** : To secure opportunities for the healthy development of children.
- **Article 39A:** : To promote equal justice and to provide free legal aid to the poor.
- **Article 43A:** : To take steps to secure the participation of workers in the management of industries.
- **Article 48A:** : To protect and improve the environment and to safeguard the forests and wildlife of the country.

2. 44th Constitutional Amendment Act, 1978

Through this amendment, a new provision was added to enable the State to ensure social and economic justice:

- **Article 38(2):** : The State shall, in particular, strive to minimize inequalities in income, status, facilities, and opportunities.

3. 86th Constitutional Amendment Act, 2002

This amendment changed the subject matter of Article 45 of the DPSP:

- **Article 45 (Revised):** : The State shall endeavor to provide early childhood care and education for all children until they complete the age of six years.

> ☆ **Important Note:** Under this amendment, education for children aged 6 to 14 years was made a Fundamental Right under Article 21A. Therefore, the wording of Article 45 was changed.

4. 97th Constitutional Amendment Act, 2011

This amendment added a new Directive Principle related to co-operative societies:

- **Article 43B:** : The State shall endeavor to promote voluntary formation, autonomous functioning, democratic control, and professional management of co-operative societies.

3) अनुच्छेद-वार पूर्ण विवरण (Article-wise Details : 36-51)

❑ अनुच्छेद 36 — 'राज्य' की परिभाषा

- ✓ "'राज्य' का वही अर्थ है जो अनुच्छेद 12 में है।"

❑ अनुच्छेद 37 —"इस भाग में अंतर्विष्ट उपबंध किसी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे, किंतु फिर भी ये तत्व देश के शासन में मूलभूत हैं और विधि (कानून) बनाने में इन तत्वों को लागू करना राज्य का कर्तव्य होगा।"

- ✓ गैर-न्यायोचित प्रकृति (Non-Justiciable)
- ✓ देश के शासन में मूलभूत (Fundamental in Governance)
- ✓ राज्य का कर्तव्य (Duty of the State)

❑ अनुच्छेद 38 — कल्याणकारी राज्य (Welfare State)

- ✓ अनुच्छेद 38(1) : राज्य का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह एक ऐसा समाज बनाए जहां हर व्यक्ति को **सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर न्याय** मिले।
- ✓ अनुच्छेद 38(2) : राज्य, **आय की असमानता को कम** करने की दिशा में काम करेगा। → 44 संशोधन 1978

3) Article-wise Details : 36-51

- Article 36 — Definition of 'State'
  - ✓ 'State' has the same meaning as in Article 12”
- Article 37 — “The provisions contained in this Part shall not be enforceable by any court, but the principles laid down therein are nevertheless fundamental in the governance of the country and it shall be the duty of the State to apply these principles in making laws."
  - ✓ Non-Justiciable
  - ✓ Fundamental in Governance
  - ✓ Duty of the State
- Article 38 — Welfare State)
  - ✓ Article 38(1) : It is the primary duty of the State to build a society in which every person receives social, economic, and political justice.
  - ✓ Article 38(2) : The State shall work to minimize inequalities in income. → 44th Amendment 1978

❑ अनुच्छेद 39 — राज्य द्वारा अनुसरणीय कुछ नीति तत्व

a) **आजीविका** के पर्याप्त साधनों का अधिकार।

b) देश के **भौतिक संसाधनों का वितरण** इस प्रकार हो जिससे समाज के अधिकतम लोगों का कल्याण हो।

c) देश की आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले कि धन और उत्पादन के साधनों का **कुछ ही हाथों में संकेंद्रण न** हो → **संसाधनों का राष्ट्रीयकरण (b and c)**

d) पुरुषों व स्त्रियों को **समान कार्य के लिए समान वेतन**

e) कामगारों (बच्चों, पुरुषों और स्त्रियों) के स्वास्थ्य और शक्ति का आर्थिक मजबूरी के कारण दुरुपयोग न हो।

f) **बच्चों को स्वतंत्र और गरिमामय** वातावरण में स्वस्थ रूप से विकसित होने के अवसर → **42 संशोधन 1976**

❑ 39 (A) → समान न्याय और नि:शुल्क विधिक सहायता

- 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976
- संसद ने 'विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987'
  - राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NALSA)
- लोक अदालतों की स्थापना का मुख्य आधार
- अनुच्छेद 14 और अनुच्छेद 21 को सुदृढ़ करता है

> ➢ *25वें संविधान संशोधन (1971) के द्वारा यह प्रावधान किया गया था कि यदि सरकार अनुच्छेद 39(b) और (c) को लागू करने के लिए कोई कानून बनाती है, तो उसे इस आधार पर न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती कि वह अनुच्छेद 14 या अनुच्छेद 19 का उल्लंघन करता है।*
>
> ➢ *अनुच्छेद 39(f) में संशोधन : मूल संविधान में बच्चों की सुरक्षा का प्रावधान था, लेकिन 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा "स्वस्थ विकास के अवसर" शब्द जोड़े गए थे।*

Article 39 — Certain principles of policy to be followed by the State

a) The right to adequate means of livelihood.)

b) The material resources of the country should be distributed so as to best subserve the welfare of the maximum number of people in society.

c) The economic system should operate so that wealth and the means of production are not concentrated in a few hands → nationalization of resources (b and c)

d) Equal pay for equal work for men and women.

e) The health and strength of workers (children, men, and women) should not be abused out of economic necessity.

f) Children should be given opportunities to develop healthily in conditions of freedom and dignity → **42nd Amendment 1976**

39(A) → Equal justice and free legal aid

- 42nd Constitutional Amendment Act, 1976
- Parliament enacted the 'Legal Services Authorities Act, 1987'
    - National Legal Services Authority (NALSA)
- Main basis for the establishment of Lok Adalats
- Strengthens Article 14 and Article 21

- *The 25th Constitutional Amendment (1971) provided that if the Government makes a law to implement Articles 39(b) and (c), it cannot be challenged in court on the ground that it violates Article 14 or Article 19.*
- *Amendment to Article 39(f): The original Constitution had a provision for the protection of children, but the words "opportunities for healthy development" were added by the 42nd Constitutional Amendment Act, 1976*

❑ अनुच्छेद 40 — "ग्राम पंचायतों का संगठन"

- ✓ ग्राम पंचायतों का गठन करें और उन्हें अधिकार व शक्तियां दें
- ✓ 73वें संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था
- ✓ **नागालैंड, मेघालय, मिज़ोरम व दिल्ली** में **पंचायती राज संस्थाएँ नहीं** हैं।
- ✓ डॉ. अंबेडकर गांवों की तत्कालीन सामाजिक संरचना के कारण पंचायतों को बहुत अधिक शक्तियां देने के पक्ष में नहीं थे। लेकिन के. संथानम और अन्य गांधीवादी नेताओं के मजबूत तर्क और दबाव के बाद इसे नीति निदेशक तत्वों में शामिल किया गया।

❑ अनुच्छेद 41 — "कुछ दशाओं में काम, शिक्षा और लोक सहायता पाने का अधिकार"

- ✓ राज्य **अपनी आर्थिक सामर्थ्य और विकास की सीमाओं के भीतर** यह सुनिश्चित करे कि लोगों को **रोजगार मिले, शिक्षा मिले, और जो लोग बुढ़ापे, बीमारी, विकलांगता या बेरोजगारी** के कारण असहाय हैं, उन्हें **सरकारी मदद** मिल सके।
- ✓ **VB—G RAM G** = विकसित भारत - गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण)
- ✓ राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP)
- ✓ यह अनुच्छेद संविधान निर्माताओं की दूरदर्शिता को दर्शाता है।

- Article 40 — "Organisation of Village Panchayats"
  - ✓ Form village panchayats and endow them with authority and powers.)
  - ✓ Three-tier Panchayati Raj system introduced by the 73rd Amendment Act, 1992.
  - ✓ Nagaland, Meghalaya, Mizoram, and Delhi do not have Panchayati Raj institutions.
  - ✓ Dr. Ambedkar was not in favour of giving panchayats too much power, due to the then social structure of villages. However, after strong arguments and pressure from K. Santhanam and other Gandhian leaders, it was included in the Directive Principles.

- Article 41 — "Right to work, education, and public assistance in certain cases"
  - ✓ The State shall, within the limits of its economic capacity and development, ensure that people get employment, education, and that those helpless due to old age, sickness, disability, or unemployment receive public assistance.)
  - ✓ VB—G RAM G = Viksit Bharat - Guarantee for Employment and Livelihood Mission (Rural)
  - ✓ National Social Assistance Programme (NSAP)
  - ✓ This Article reflects the foresight of the framers of the Constitution.

❑ अनुच्छेद 42 — "काम की न्यायसंगत और मानवोचित दशाओं का तथा प्रसूति सहायता का उपबंध"

- ✓ काम की न्यायसंगत और मानवोचित (Just and humane) दशाओं को करेगा
- ✓ कामकाजी महिलाओं को गर्भावस्था और प्रसव के दौरान सहायता मिलनी चाहिए।
- ✓ मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 (संशोधित 2017) → **12 सप्ताह से बढ़ाकर 26** सप्ताह
- ✓ Factories Act, 1948
- ✓ केंद्रीय सरकार के पुरुष कर्मचारियों को 15 दिनों का सवैतनिक अवकाश मिलता है, वहीं निजी क्षेत्र के लिए पितृत्व अवकाश अनिवार्य करने वाला कानून नहीं है।

❑ अनुच्छेद 43 — कर्मकारों के लिए निर्वाह मजदूरी आदि

- ✓ श्रमिकों को **एक निर्वाह मजदूरी** और जीवन का एक उचित स्तर सुनिश्चित करने का प्रयास।
- ✓ राज्य ऐसी कार्य परिस्थितियाँ सुनिश्चित करेगा जो **अवकाश के पूर्ण उपयोग** तथा **सामाजिक और सांस्कृतिक अवसरों की गारंटी** देती हों।
- ✓ **ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों** को बढ़ावा

❑ 43 (A) — उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी

- ✓ 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976

❑ अनुच्छेद 43 (B) — सहकारी समितियों (Co-operative Societies) को प्रोत्साहन

- ✓ 97वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2011

Article 42 — "Provision for just and humane conditions of work and maternity relief"

- ✓ Shall secure just and humane conditions of work.)
- ✓ Working women should receive support during pregnancy and childbirth.
- ✓ Maternity Benefit Act, 1961 (amended 2017) → increased from 12 weeks to 26 weeks
- ✓ Factories Act, 1948 (Factories Act, 1948)
- ✓ Male employees of the Central Government get 15 days of paid leave, whereas there is no law making paternity leave mandatory for the private sector.

Article 43 — Living wage, etc., for workers

- ✓ Endeavour to secure workers a living wage and a decent standard of life.)
- ✓ The State shall ensure working conditions that guarantee full enjoyment of leisure and social and cultural opportunities.
- ✓ Promotion of cottage industries in rural areas.

43 (A) - Workers' participation in management of industries

- ✓ 42nd Constitutional Amendment Act, 1976

Article 43(B) — Promotion of Co-operative Societies

- ✓ 97th Constitutional Amendment Act, 2011

❑ अनुच्छेद 44 — "नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता (Uniform Civil Code - UCC) “

- ✓ "एक देश, एक कानून“ → देश के सभी नागरिकों के लिए, चाहे वे किसी भी धर्म, जाति या लिंग के हों, एक समान नागरिक कानून का होना।
  - ➢ विवाह (Marriage), तलाक (Divorce), उत्तराधिकार और विरासत (Inheritance & Succession), गोद लेना (Adoption), तलाक के बाद पत्नी और बच्चों के भरण-पोषण (एलिमनी) के नियम एक जैसे होंगे।
- ✓ हिंदू मैरिज एक्ट (1955) और हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (1956), मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एप्लीकेशन एक्ट (1937)
- ✓ **भारत में गोवा एकमात्र ऐसा राज्य** है जहां 1867 (पुर्तगाली) से ही समान नागरिक संहिता लागू है।
- ✓ **27 जनवरी 2025 → उत्तराखंड स्वतंत्र भारत का पहला राज्य है जिसने UCC को पूरी तरह से लागू किया है।**
- ✓ **25 मार्च, 2026 → गुजरात विधानसभा ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) विधेयक पारित किया**
- ✓ **27 मई, 2026 → असम विधानसभा ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) विधेयक पारित किया**
- ✓ शाह बानो मामला (1985), सरला मुदगल मामला (1995) और सायरा बानो मामला (2017 - तीन तलाक)। इन सभी मामलों में सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को अनुच्छेद 44 लागू करने की याद दिलाई है।

❑ Article 44 — "Uniform Civil Code (UCC) for citizens"

- ✓ "One nation, one law" → having a uniform civil law for all citizens of the country, regardless of religion, caste, or gender.
    - ➢ Rules regarding marriage, divorce, inheritance and succession, adoption, and maintenance (alimony) of wife and children after divorce would be the same for all
- ✓ Hindu Marriage Act (1955) and Hindu Succession Act (1956), Muslim Personal Law (Shariat) Application Act (1937))
- ✓ Goa is the only state in India where a Uniform Civil Code has been in effect since 1867 (Portuguese era).
- ✓ **27 January 2025 → Uttarakhand is the first state in independent India to fully implement the UCC.**
- ✓ **25 March 2026 → The Gujarat Legislative Assembly passed the Uniform Civil Code (UCC) Bill.**
- ✓ **27 May 2026 → The Assam Legislative Assembly passed the Uniform Civil Code (UCC) Bill.**
- ✓ Shah Bano case (1985), Sarla Mudgal case (1995), and Shayara Bano case (2017 - Triple Talaq). In all these cases, the Supreme Court has reminded the government to implement Article 44.

- **अनुच्छेद 45 — "राज्य सभी बच्चों को छह वर्ष (6 years) की आयु पूरी करने तक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा (ECCE) प्रदान करने का प्रयास करेगा। "**
  - ✓ मूल रूप से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए।
  - ✓ 86वां संविधान संशोधन (2002) : 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा के अधिकार को अनुच्छेद 21A के तहत एक मौलिक अधिकार (Fundamental Right)
- **अनुच्छेद 46 — "राज्य, जनता के दुर्बल वर्गों, अनुसूचित जातियों (SCs) और अनुसूचित जनजातियों (STs) के शिक्षा और अर्थ संबंधी हितों की अभिवृद्धि करेगा और सामाजिक अन्याय तथा शोषण से उनकी संरक्षा करेगा "**
- **अनुच्छेद 47 — "पोषाहार स्तर, जीवन स्तर व लोक स्वास्थ्य"**
  - ✓ लोगों के पोषण स्तर और जीवन स्तर को सुधारने
  - ✓ सार्वजनिक स्वास्थ्य (Public Health) में सुधार
  - ✓ नशीले पदार्थों पर प्रतिबंध
  - ✓ पूर्ण शराबबंदी → लक्षद्वीप, बिहार, गुजरात, मिजोरम और नगालैंड
- **अनुच्छेद 48 — "कृषि व पशुपालन का संगठन"**
  - ✓ कृषि और पशुपालन को आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों से संगठित करने का प्रयास
  - ✓ गायों, बछड़ों तथा अन्य दुधारू (Milch) और वाहक (Draught) पशुओं की नस्लों के संरक्षण और सुधार

- **Article 45 — "The State shall endeavour to provide early childhood care and education (ECCE) for all children until they complete the age of six years."**
  - ✓ Originally for all children up to the age of 14 years.
  - ✓ 86th Constitutional Amendment (2002): Made the right to education for children aged 6 to 14 years a Fundamental Right under Article 21A.
- **Article 46 — "The State shall promote the educational and economic interests of the weaker sections of the people, particularly the Scheduled Castes (SCs) and Scheduled Tribes (STs), and shall protect them from social injustice and exploitation"**
- **Article 47 — "Level of nutrition, standard of living, and public health"**
  - ✓ Raising the level of nutrition and standard of living of people.
  - ✓ Improvement of Public Health
  - ✓ Prohibition of intoxicating substances
  - ✓ Complete prohibition of alcohol → Lakshadweep, Bihar, Gujarat, Mizoram, and Nagaland.
- **Article 48 — "Organisation of agriculture and animal husbandry"**
  - ✓ Endeavour to organise agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines
  - ✓ Preservation and improvement of breeds of cows, calves, and other milch and draught cattle.

❑ अनुच्छेद 48 (A) — "पर्यावरण, वन व वन्यजीवों की रक्षा"

- ✓ पर्यावरण, वन तथा वन्य जीवों के संरक्षण।
- ✓ 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976
- ✓ वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972
- ✓ वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980
- ✓ पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986
- ✓ राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) अधिनियम, 2010

❑ अनुच्छेद 49 — "राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों व स्थानों का संरक्षण "

- ✓ प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 (AMASR Act)
- ✓ एंटीक्विटीज़ एंड आर्ट ट्रेज़र्स एक्ट, 1972

❑ 50 — "न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण"

- ✓ राज्य की लोक सेवाओं में न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करने के लिए राज्य कदम उठाएगा
- ✓ फ्रांसीसी दार्शनिक मोंटेस्क्यू के 'शक्तियों के पृथक्करण' के सिद्धांत पर आधारित है,

❑ अनुच्छेद 51 — "अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बढ़ावा"

- ✓ अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि
- ✓ राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण संबंध
- ✓ अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और संधियों का सम्मान
- ✓ युद्ध के बजाय मध्यस्थता (Arbitration) द्वारा विवादों का समाधान

- Article 48A — "Protection of environment, forests, and wildlife”
  - ✓ Protection of environment, forests, and wildlife.
  - ✓ 42nd Constitutional Amendment Act, 1976
  - ✓ Wildlife (Protection) Act, 1972
  - ✓ Forest (Conservation) Act, 1980
  - ✓ Environment (Protection) Act, 1986
  - ✓ National Green Tribunal (NGT) Act, 2010
- Article 49 — "Protection of monuments and places of national importance”
  - ✓ Ancient Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1958 (AMASR Act)
  - ✓ Antiquities and Art Treasures Act, 1972
- Article 50 — "Separation of judiciary from executive“
  - ✓ The State shall take steps to separate the judiciary from the executive in the public services of the State
  - ✓ Based on French philosopher Montesquieu's principle of 'Separation of Powers'
- Article 51 — "Promotion of international peace and security”
  - ✓ Promotion of international peace and security.
  - ✓ Just and honourable relations between nations.
  - ✓ Respect for international law and treaty obligations
  - ✓ Settlement of disputes by arbitration rather than war.

4) भाग-4 से बाहर के निदेश

- **अनुच्छेद 350A (भाग 17) —** प्रत्येक राज्य व स्थानीय प्राधिकरण भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के **बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त** सुविधाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा।
- **अनुच्छेद 351 (भाग 17) —** संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह **हिंदी भाषा का प्रसार व विकास** करे।
- **अनुच्छेद 325 (भाग 16) —** संघ या किसी राज्य की **सेवाओं व पदों के लिए नियुक्तियाँ करने में अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के दावों का ध्यान रखा** जाएगा।

मूल अधिकार	निदेशक तत्व
नकारात्मक (Negative)	सकारात्मक (Positive)
न्यायोचित (Justiciable)	गैर-न्यायोचित (Non-justiciable) हैं
लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना है।	सामाजिक व आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना
इन्हें लागू करने के लिए विधान की आवश्यकता नहीं, ये स्वतः लागू होते हैं।	इन्हें लागू रखने हेतु विधान (कानून) बनाने की आवश्यकता होती है — ये स्वतः लागू नहीं होते।

4) Directives outside Part-IV

- **Article 350A (Part XVII) -** Every State and local authority shall endeavour to provide adequate facilities for instruction in the mother tongue at the primary stage of education to children belonging to linguistic minority groups.)
- **Article 351 (Part XVII) -** It shall be the duty of the Union to promote the spread and development of the Hindi language.)
- **Article 325 (Part XVI) -** The claims of Scheduled Castes and Scheduled Tribes shall be taken into consideration in making appointments to services and posts under the Union or a State.

Fundamental Rights	Directive Principles
Negative	Positive
Justiciable	Non-justiciable
Aim to establish a democratic political system	Establishment of social and economic democracy
No legislation is required to enforce them; they apply automatically	Legislation (law) is required to enforce them — they do not apply automatically

वाद व वर्ष	व्यवस्था (Ruling)
चंपकम दोराईराजन वाद (1951)	○ मूल अधिकारों की सर्वोच्चता : DPSP को लागू करने के लिए मूल अधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। ○ यदि मूल अधिकारों और नीति निर्देशक तत्वों के बीच कोई भी टकराव होता है, तो मूल अधिकार ही प्रभावी होंगे। ○ प्रथम संविधान संशोधन अधिनियम, 1951 → अनुच्छेद 15(4)
गोलकनाथ वाद (1967)	○ मूल अधिकार 'पवित्र, शाश्वत और अलंघनीय' (Transcendental and Immutable) प्रकृति के हैं। ○ यदि कोई कानून DPSP को लागू करने के लिए बनाया जाता है और वह मूल अधिकारों का हनन करता है, तो वह कानून असंवैधानिक ही माना जाएगा। ○ 25वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1971 → अनुच्छेद 31C
केशवानंद भारती वाद (1973)	○ संसद मूल अधिकारों सहित संविधान के किसी भी भाग में संशोधन कर सकती है, बशर्ते इससे संविधान का **'मूल ढाँचा' (Basic Structure)** क्षतिग्रस्त न हो। ○ अनुच्छेद 31C के प्रथम भाग को वैध माना गया, दूसरा भाग (न्यायिक समीक्षा को रोकना) अवैध घोषित हुआ।
मिनर्वा मिल्स वाद (1980)	○ **42वें संशोधन द्वारा किया गया अनुच्छेद 31C** का विस्तार असंवैधानिक व अवैध घोषित किया गया। ○ भारतीय संविधान की नींव, **भाग-III और भाग-IV के बीच संतुलन के पहिये पर टिकी हुई है।** ○ सामान्य परिस्थितियों में, मूल अधिकार (FR) सदैव नीति निर्देशक तत्वों (DPSP) से उच्च और श्रेष्ठ माने जाएंगे।

Case & Year	Ruling
Champakam Dorairajan Case (1951)	○ Supremacy of Fundamental Rights: Fundamental Rights cannot be violated to implement DPSP. ○ If there is any conflict between Fundamental Rights and Directive Principles, Fundamental Rights shall prevail. ○ First Constitutional Amendment Act, 1951 → Article 15(4)
Golaknath Case (1967)	○ Fundamental Rights are of a 'Transcendental and Immutable' nature. ○ If a law is made to implement DPSP and it violates Fundamental Rights, that law shall be deemed unconstitutional. ○ 25th Constitutional Amendment Act, 1971 → Article 31C
Kesavananda Bharati Case (1973)	○ Parliament can amend any part of the Constitution, including Fundamental Rights, provided the 'Basic Structure' of the Constitution is not damaged. ○ The first part of Article 31C was upheld as valid; the second part (barring judicial review) was declared invalid.
Minerva Mills Case (1980)	○ The extension of Article 31C made by the 42nd Amendment was declared unconstitutional and invalid. ○ The foundation of the Indian Constitution rests on the wheel of balance between Part-III and Part-IV. ○ In ordinary circumstances, Fundamental Rights (FR) shall always be considered superior and higher than Directive Principles (DPSP).

भारत के नीति निर्देशक तत्व

भाग IV • अनुच्छेद 36 से 51

1 अनुच्छेद 36 –
राज्य की परिभाषा

2 अनुच्छेद 37 –
नीति निर्देशक तत्व न्यायालय में प्रवर्तनीय नहीं, परंतु शासन के लिए मूलभूत

3 अनुच्छेद 38 –
सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय पर आधारित लोककल्याणकारी व्यवस्था

4 अनुच्छेद 39 –
राज्य की नीति के कुछ सिद्धांत: सभी के लिए आजीविका, संसाधनों का समान हित में वितरण, धन के संकेंद्रण पर रोक, समान कार्य के लिए समान वेतन, श्रमिकों व बच्चों की सुरक्षा

5 अनुच्छेद 39A –
समान न्याय और निःशुल्क विधिक सहायता

6 अनुच्छेद 40 –
ग्राम पंचायतों का संगठन

7 अनुच्छेद 41 –
काम, शिक्षा और सार्बजगिक सहायता का अधिकार (कुछ परिधितितियों में)

8 अनुच्छेद 42 –
मानवीय कार्य दशाऐं और प्रसूति सहायता

9 अनुच्छेद 43 –
निर्वाह मजदूरी, शिष्ट जीवन स्तर और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन

10 अनुच्छेद 43A –
उद्योगों के प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी

11 अनुच्छेद 43B –
सहकारी समितियों को प्रोत्साहन

12 अनुच्छेद 44 –
समान नागरिक संहिता

13 अनुच्छेद 45 –
6 वर्ष तक के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा

14 अनुच्छेद 46 –
अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और दुर्बल वर्गों के शैक्षिक व आर्थिक हितों की उन्नति

15 अनुच्छेद 47 –
पोषण स्तर, जीवन स्तर और लोक स्वास्थ्य में सुधार; नशोले पदार्थों पर नियंत्रण

16 अनुच्छेद 48 –
कृषि और पशुपालन का आधुनिक एवं वैज्ञानिक संगठन; गौवंश संरक्षण

17 अनुच्छेद 48A –
पर्यावरण, वन और वन्यजीवों की रक्षा

18 अनुच्छेद 49 –
राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों और वस्तुओं का संरक्षण

19 अनुच्छेद 50 –
कार्यपालिका से न्यायपालिका का पृथक्करण

20 अनुच्छेद 51 –
अंतराष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और सम्मानजनक संबंधों का संवर्धन

★ नीति निर्देशक तत्व देश में सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना का आधार माने जाते हैं। ★

Directive Principles of State Policy in India

Part IV • Articles 36 to 51

Constitution
Justice
Equality

Satyameva Jayate

1 Article 36 — Definition of the State

2 Article 37 — Directive Principles are not enforceable by courts, but they are fundamental in the governance of the country

3 Article 38 — A welfare-oriented social order based on social, economic, and political justice

4 Article 39 — Certain principles of State policy: adequate livelihood for all, distribution of resources for the common good, prevention of concentration of wealth, equal pay for equal work, and protection of workers and children

5 Article 39A — Equal justice and free legal aid

6 Article 40 — Organization of village panchayats

7 Article 41 — Right to work, education, and public assistance in certain cases

8 Article 42 — Just and humane conditions of work and maternity relief

9 Article 43 — Living wage, decent standard of life, and promotion of cottage industries

10 Article 43A — Participation of workers in the management of industries

11 Article 43B — Promotion of cooperative societies

12 Article 44 — Uniform Civil Code

13 Article 45 — Early childhood care and education for children below the age of six years

14 Article 46 — Promotion of the educational and economic interests of Scheduled Castes, Scheduled Tribes, and weaker sections

15 Article 47 — Improvement of nutrition, standard of living, and public health; prohibition of intoxicating substances

16 Article 48 — Modern and scientific organization of agriculture and animal husbandry; protection of cattle

17 Article 48A — Protection of the environment, forests, and wildlife

18 Article 49 — Protection of monuments and objects of national importance

19 Article 50 — Separation of the judiciary from the executive

20 Article 51 — Promotion of international peace, security, and honorable relations among nations

★ **Directive Principles are regarded as the foundation for establishing social and economic democracy in the country.** ★

अध्याय 11 : मौलिक कर्तव्य (अनुच्छेद 51A)

1) **सरदार स्वर्ण सिंह समिति (1976) :** इस समिति ने संविधान में मौलिक कर्तव्यों को शामिल करने की सिफारिश की।

2) **42वां संविधान संशोधन अधिनियम (1976) :** संविधान में नया **भाग IV-A** और **अनुच्छेद 51A** जोड़ा गया, जिसमें 10 मौलिक कर्तव्य शामिल किए गए।

3) **प्रेरणा स्रोत :** तत्कालीन सोवियत संघ (USSR)

4) **86वां संविधान संशोधन (2002) :** 11वां मौलिक कर्तव्य जोड़ा गया,

5) मौलिक कर्तव्य केवल भारतीय नागरिकों पर लागू होते हैं।

6) **न्यायालयों द्वारा इन्हें सीधे लागू नहीं** किया जा सकता। इनके **उल्लंघन पर सीधे दंड का कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं** है।

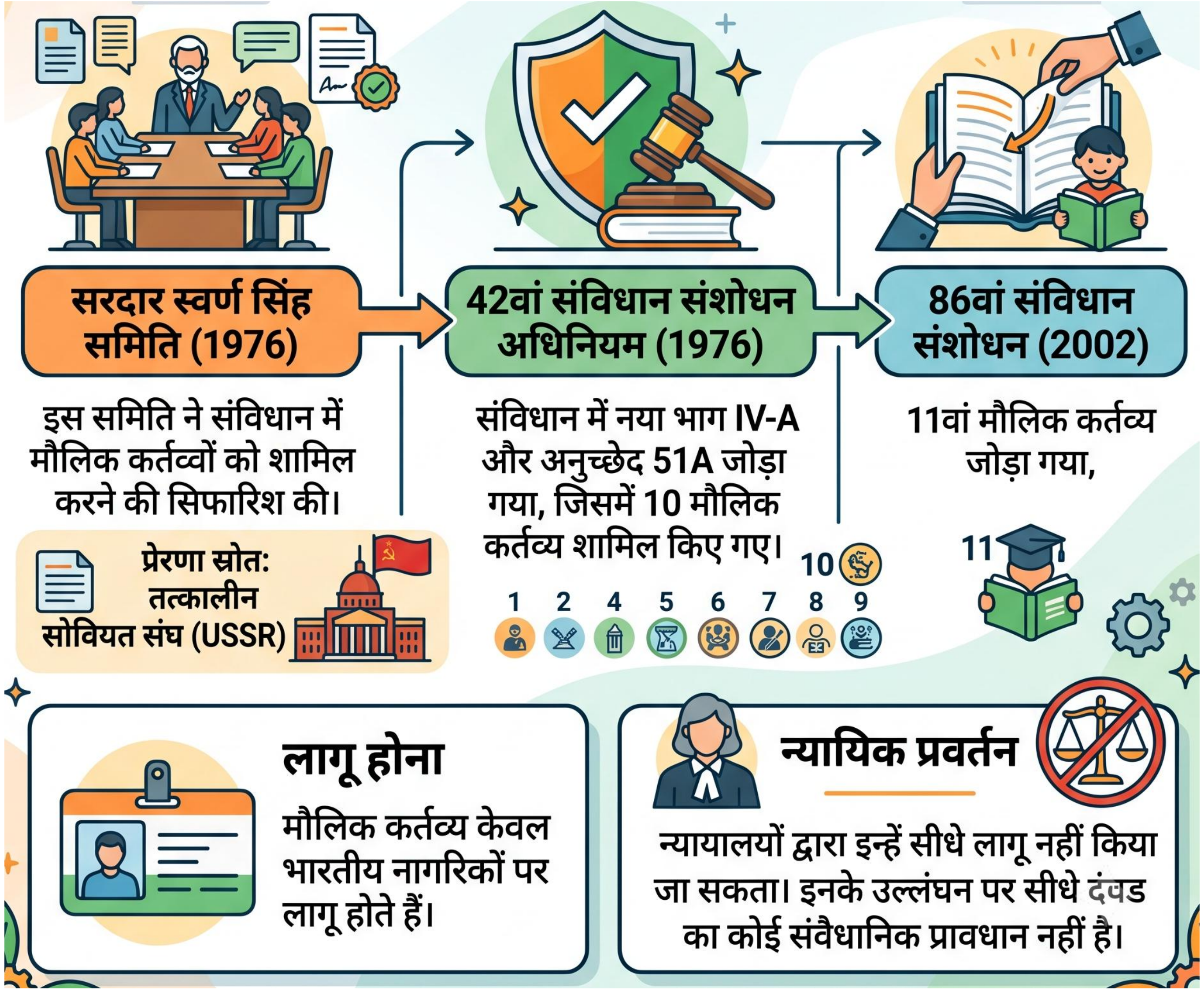

Chapter 11 : Fundamental Duties (Article 51A)

1) **Sardar Swaran Singh Committee (1976) :** This committee recommended the inclusion of Fundamental Duties in the Constitution.
2) **42nd Constitutional Amendment Act (1976) :** A new Part IV-A and Article 51A were added to the Constitution, incorporating 10 Fundamental Duties.
3) **Source of inspiration :** The then Soviet Union (USSR)
4) **86th Constitutional Amendment (2002) :** The 11th Fundamental Duty was added,
5) Fundamental Duties apply only to Indian citizens.
6) They cannot be directly enforced by courts. There is no direct constitutional provision for punishment for their violation.

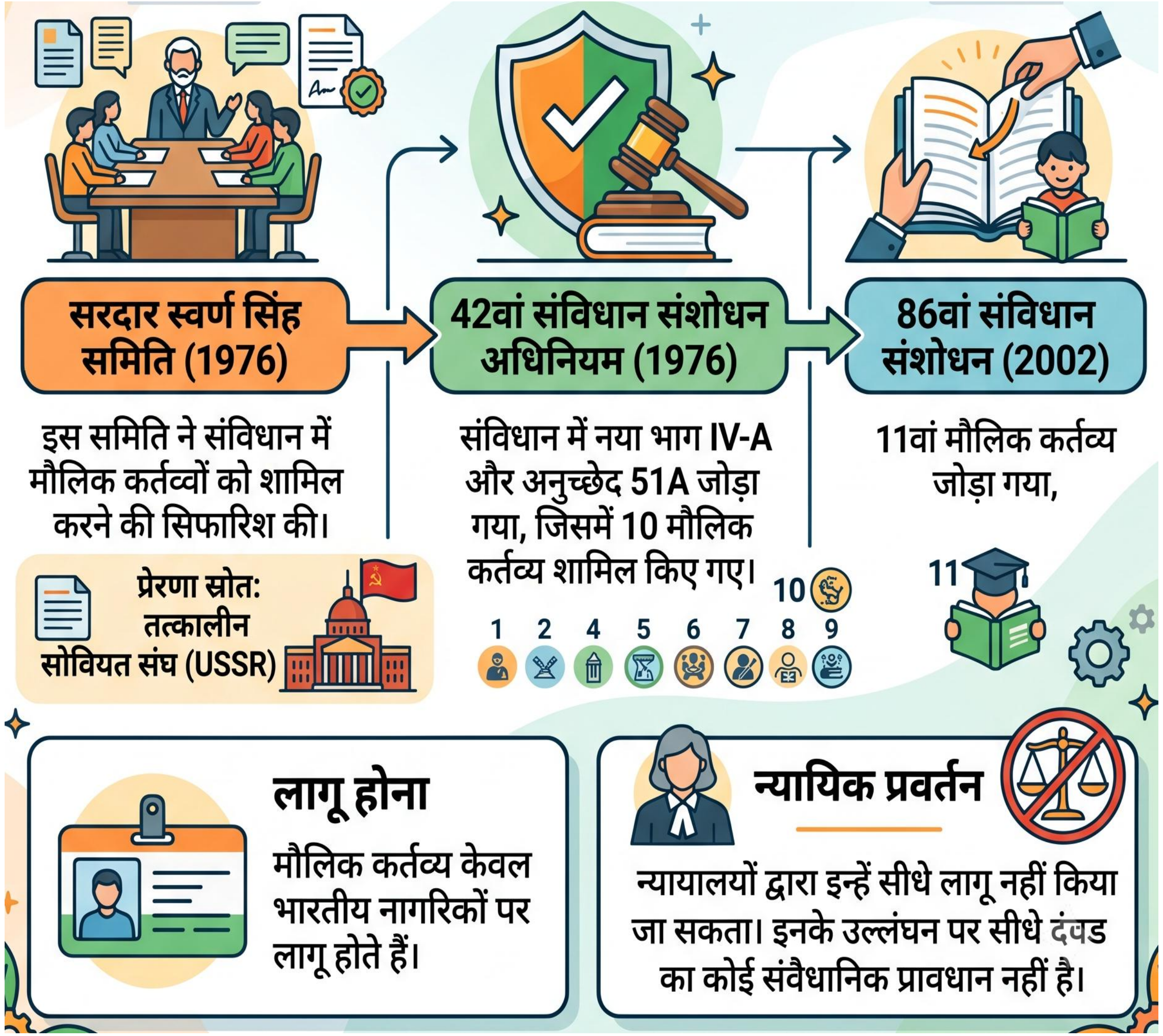

भाग IV-A और अनुच्छेद 51A → 11 मौलिक कर्तव्य

1) **संविधान का पालन करे** और उसके आदर्शों, संस्थाओं, **राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर** करे।

2) स्वतंत्रता के लिए हमारे **राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों** को हृदय में संजोए।

3) भारत की **संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा** करे और उसे अक्षुण्ण रखे।

4) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने **पर राष्ट्र की सेवा** करे।

5) भारत के सभी लोगों में **समरसता और समान भ्रातृत्व** की भावना का निर्माण करे और **महिलाओं के सम्मान** के विरुद्ध प्रथाओं का त्याग करे।

6) हमारी **सामासिक संस्कृति** की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

7) प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षातथा प्राणि के प्रति दया भाव।

8) **वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temper)**, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।

9) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

10) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले।

11) **86वें संशोधन 2002 द्वारा शामिल :** 6 से 14 वर्ष की आयु के अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Part IV-A and Article 51A → 11 Fundamental Duties

1) To abide by the Constitution and respect its ideals, institutions, the National Flag, and the National Anthem.
2) To cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom.
3) To uphold and protect the sovereignty, unity, and integrity of India.
4) To defend the country and render national service when called upon to do so.
5) To promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India and to renounce practices derogatory to the dignity of women.
6) To value and preserve the rich heritage of our composite culture.
7) To protect the natural environment and to have compassion for living creatures.
8) To develop the scientific temper, humanism, and the spirit of inquiry and reform.
9) To safeguard public property and to abjure violence.
10) To strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity, so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement.
11) Added by the 86th Amendment 2002: To provide opportunities for education to one's child or ward between the ages of 6 and 14 years.

वर्मा समिति (1999) का अवलोकन

जस्टिस जे.एस. वर्मा समिति ने स्पष्ट किया कि कई मौलिक कर्तव्यों को लागू करने के लिए पहले से ही पहले से ही कानूनी प्रावधान मौजूद हैं। यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा में अक्सर इन कानूनों को कर्तव्यों से जोड़कर पूछा जाता है:

- **राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971** → संविधान, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान का अपमान रोकता है (कर्तव्य 1 संबंधित)
- **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 और वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980** → प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा (कर्तव्य 7 संबंधित)
- **नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम (1955)** → जाति और धर्म संबंधित अपराधों के लिए दंड (कर्तव्य 5 संबंधित)
- **भारतीय दंड संहिता (IPC)** → राष्ट्रीय अखंडता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले लांछन और दावों को दंडनीय अपराध मानती है (कर्तव्य 3 संबंधित)

आलोचना (Criticism)

- **अपूर्ण सूची:** कई महत्वपूर्ण कर्तव्य इसमें शामिल नहीं हैं, जैसे मतदान करना, कर का भुगतान करना और परिवार नियोजन।
  (ध्यान दें: स्वर्ण सिंह समिति ने कर भुगतान को मौलिक कर्तव्य बनाने की सिफारिश की थी, लेकिन इसे खारिज कर दिया गया था)
- **अस्पष्ट शब्दावली:** कुछ शब्द बहुत जटिल और अस्पष्ट हैं, जैसे "सामासिक संस्कृति", "वैज्ञानिक दृष्टिकोण" और "उच्च आदर्श", जिनकी व्याख्या अलग-अलग तरह से की जा सकती है।
- **गैर-न्यायोचित प्रकृति:** आलोचकों का मानना है कि दंड के प्रावधान के बिना ये केवल उपदेश" (Moral Precepts) बनकर रह गए हैं।

Moral Precepts

OVERVIEW OF VERMA COMMITTEE (1999)

@Aloukik

Justice J.S. Verma Committee clarified that legal provisions already exist for the implementation of many fundamental duties. These laws are often linked to duties in UPSC preliminary examinations:

- **The Prevention of Insults to National Honour Act, 1971** → Prevents insults to the Constitution, National Flag, National Anthem (Related to Duty 1)
- **Wildlife (Protection) Act, 1972 and Forest (Conservation) Act, 1980** → Protection of natural environment (Related to Duty 7)
- **Protection of Civil Rights Act (1955)** → Punishes offenses related to caste and religion (Related to Duty 5)
- **Indian Penal Code (IPC)** → Considers imputations and claims that prejudicially affect national integrity as punishable offenses (Related to Duty 3)

@Aloukik

CRITICISM

- **Incomplete List:** Many important duties are not included, such as voting, tax payment, and family planning.
  (Note: Swaran Singh Committee had recommended making tax payment a fundamental duty, but it was rejected)
- **Vague Terminology:** Some terms are very complex and vague, such as ‘composite culture’, ‘scientific temper’, and ‘noble ideals’, which can be interpreted in different ways.
- **Non-justiciable Nature:** Critics believe that without provision for punishment, they remain only “moral “moral precepts”.

Moral Precepts